NITI Aayog

सत्यमेव जयते
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare
Government of India

Food and Agriculture Organization of the United Nations

## राष्ट्रीय संवाद

# 2030 की ओर अग्रसर भारतीय कृषि

## किसानों की आय बढ़ाने, पोषण सुरक्षा एवं सतत खाद्य प्रणाली के लिए दिशा एवं उपाय

## शोध-पत्र: कीट, महामारी, तत्परता एवं जैव सुरक्षा

लेखक: डॉ. एन.के. कृष्ण कुमार और डॉ. एस. वेन्निला

महामारी भारत की खाद्य, पोषण, स्वास्थ्य, आजीविका, जैव विविधता एवं पारिस्थितिक तंत्र संबंधी सेवाओं को नुकसान पहुंचाते हुए इसकी जैव सुरक्षा के लिए खतरा बन रही है। वैश्विक दुनिया में लोगों और सामग्री का तेजी से तथा बड़े पैमाने पर आवागमन, जलवायु परिवर्तन और निगरानी की पर्याप्त व्यवस्था न होने की वजह से आने वाले सालों में महामारी की घटनाएं बढ़ेंगी। हालांकि, इसके प्रभाव को कम करने में वैक्सीन एवं सिंथेटिक दवाएं और एग्रोकेमिकल्स महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, इसके बावजूद प्रतिरोध, पुनरुत्थान, खाद्य सुरक्षा, जैव विविधता, और पारिस्थितिकी तंत्र संबंधी सेवाओं से जुड़ी समस्याएं आज के दौर की वास्तविकता है। भारत के लिए इन खतरों से निपटने के लिए कई तैयारियों की आवश्यकता है: सीमा-पार के कीट निगरानी संबंधी परिवर्तनकारी बदलावों का हिस्सा बनना और सख्त संगरोध लागू करना, आणविक निदान में तेजी लाना, उन्नत शोध एवं प्रशिक्षण संबंधी उपाय करना। पारदर्शिता, राजनीतिक प्रतिबद्धता, शोध और विकास में निवेश, बिग डाटा का विश्लेषण एवं व्याख्या, मेटा-एनालिसिस, इंस्टीट्यूशनल / इंटरनेशनल स्तर पर मल्टी-लैटरल सहयोग इस दिशा में तत्परता और जैव-सुरक्षा हेतु भावी उपाय हैं। महामारी से निपटने हेतु मात्र राष्ट्रीय स्तर के बजाय क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्तर पर एकजुट प्रयास करने की जरुरत है।

पेपर डाउनलोड करने के लिए यहां क्लिक करें।

**मुख्य शब्द:** जैव-सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, महामारी, संगरोध, जूनोटिक (पशुजन्य)